गाँव 'बलियापट्टी' की अपनी कहानी

शीतल कुमारी*

74 साल की गिरिजा देवी विधवा हैं और दो पुत्रों में एक विक्षिप्त है। तीन बेटियां हैं जिनकी शादी हो चुकी है। अपने पिता की इकलौती संतान गिरिजा अपने मायके में ही रह रही है। बेटे और बहू उससे दूर रहते हैं। अभी गिरिजा देवी की 110 वर्ष की माँ भी जीवित हैं। इस प्रकार गिरिजा को अपनी बूढ़ी मां और एक विक्षिप्त बेटे की देखभाल करनी पड़ती है जबकि वह स्वयं भगवान भरोसे जी रही हैं.....

बिहार राज्य के सिवान जनपद का एक छोटा-सा गाँव है- बलियापट्टी। बलियापट्टी महराजगंज अनुमंडल के अंतर्गत माधोपुर ग्राम पंचायत में आता है। इस गाँव का पत्रालय जलालपुर और थाना जी. बी. नगर (तखारा बाजार) है। गाँव के पूरब में माधोपुर, उत्तर में जलालपुर, पश्चिम में गंडक नहर तथा दक्षिण में चाँदपुर गाँव है। कहने वाले कहते हैं कि नब्बे के दशक में जब पूरे राज्य में जंगलराज का वर्चस्व था तो चाँदपुर की लठैती देखने वाली होती थी। इन चारों गाँवों में बलियापट्टी अपनी लठैती के लिए कम अपनी मधुर मुस्कान के लिए ज्यादा जाना जाता है। बकौल बाबू चंद्रिका सिंह- "हम बलियापट्टी वाले जलालपुर से सीखते हैं और भाईचारा भी निभाते हैं, लेकिन माधोपुर का पहले पानी भी नहीं पीते थे।" 85 वर्षीय चंद्रिका बाबू की ये बातें इस ओर इशारा करती हैं कि कहीं न कहीं बलियापट्टी का ऐतिहासिक संबंध माधोपुर से अच्छा नहीं रहा है और जलालपुर के साथ निकट का रहा है।

गाँव में लगभग एक सौ परिवार रहते हैं और आबादी भी तकरीबन पाँच सौ से कम ही है। लेकिन भूमि का असमान वितरण इस गाँव को कई तरह की संरचनागत दुविधाओं में डाले हुए है। तीन सौ बीघा के गाँव में दो सौ बीघा केवल बड़का घर का ही है, शेष सौ बीघा में पूरे गाँव की भागीदारी है। यही कारण है कि तथाकथित ऊँची जाति के किसानों के पास भी बमुश्किल एक-दो बीघे की ही हिस्सेदारी देखने को मिलती है। ऐसे में, खेत का मेंड़ तोड़कर अपने-अपने खेतों का नए ढंग से जबर्जस्ती सीमांकन करने की प्रवृत्ति यहाँ के लोगों में काफी है। इतना ही नहीं, जमीन की कीमत भी अन्य गाँवों की तुलना में ज्यादा है। गाँव के प्रत्येक घर में कोई न कोई प्रवासी है। इसमें भी दिल्ली-एन.सी.आर. में प्रवासी सबसे ज्यादा हैं।

गाँव में शिक्षा की स्थिति भी अच्छी नहीं कही जाएगी। एक आंगनबाड़ी केन्द्र और एक प्राथमिक विद्यालय है, जिसे अब प्रोन्नत कर माध्यमिक विद्यालय बना दिया गया है। विद्यालय में बच्चे पहले जमीन पर बैठकर ही पढ़ते थे, लेकिन कुछ वर्षों से उन्हें फर्नीचर मिल गया है। फिर भी, कक्षाओं में छात्रों की उपस्थिति नगण्य ही है। दोपहर के समय मिड-डे मिल के नाम पर छात्रों का जमावड़ा भले ही कुछ देर के लिए दिख जाए, लेकिन औसत उपस्थिति दयनीय है। छात्र-शिक्षकों का अनुपात भी दयनीय है। आंगनबाड़ी केन्द्र सिर्फ एक आंगन में सिमटकर रह गया है। दिलचस्प बात यह है कि कागजी कारवाई में कोई कमी नहीं है।

70 वर्षीय दलित मजदूर रामलगन राम, सुदामा बाबू के घर 3000 रुपये प्रतिमाह पर काम करते हैं। पूछने पर बताते हैं कि बचपन से ही मैं ग्राम्य नृत्य में नर्तकी बनकर काम करता था, और भिखारी ठाकुर का नाच देखता था परन्तु ढलती हुई उम्र में अब मास्टर साहब सुदामा बाबू का ही एक सहारा है.....

* शोधछात्रा, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय।

आस-पड़ोस के गाँवों में भी प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र नहीं है। आज से दस-बारह वर्ष पहले ही गाँव के प्रतिष्ठित किसान बृजनंदन बाबू ने स्वास्थ्य केन्द्र के लिए अपनी भूमि को दान में दिया था, जिस पर ठेकेदार ने भवन भी खड़ा कर दिया लेकिन व्यावहारिक रूप से आज भी वह केवल भवन मात्र ही है, स्वास्थ्य सुविधाएँ नगण्य हैं।

गाँव की युवा पीढ़ी पलायन और प्रवास कर शहरों में जा चुकी है। बूढ़े, लाचार सेवानिवृत्त और शैक्षणिक योग्यता न रखने वाले कुछ सिरफिरे युवा ही गाँव की शोभा बढ़ा रहे हैं। स्थिति ऐसी है कि आपातकालीन परिस्थिति में यह गाँव भगवान भरोसे ही है। सुशासन बाबू ने गाँव की एकमात्र कच्ची सड़क का पक्कीकरण अवश्य करा दिया है, लेकिन सड़क का तंग स्वरूप और उसके किनारों पर मवेशियों की जमावट गाँव की जड़ मानसिकता को प्रतिबिंबित कर रही है।

खेती और किसानी इस गाँव की मुख्य आर्थिक क्रिया है। कुछ लोग गाँव के ही बाजार में छोटी-छोटी दुकानें चलाकर जीविकोपार्जन करते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि गाँव के लोगों में अंधभक्ति चरम पर है। किसी भी व्यक्ति की सफलता व विफलता का मापदंड यहाँ के लोगों की दृष्टि में उसकी आर्थिक हैसियत ही है। कुछ लोग पुरातन महाजनी व्यवस्था को आज भी संरक्षित किए हुए हैं। और उनका ब्याज दर 'कोरोना वायरस' की तरह चक्रीय गति से बढ़ता है। ब्याज की मार प्रायः गाँव के पिछड़े और दलित समाज पर ज्यादा दीखता है। इसके अतिरिक्त कुछ लोग ऐसे भी हैं जो स्वयं को 'दीनबंधु' कहते हैं और भगवान शिव के प्रसाद के रूप में गाँजा और अवैध व्यापार भी करते हैं। आर्थिक विपन्नता की स्थिति इतनी भयावह है कि दिन में मजदूरी न कर पाने वाले तथाकथित 'सिपाही' रात में चोरी कर '21वीं सदी के नए भारत' को चुनौती देते नजर आते हैं।

बिहार के ग्रामीण क्षेत्र में तपती हुई दोपहरी में मजदूरों को भोजन के रूप में सत्तू खाने को प्रायः मिलता है। ऐसे ही, एक दोपहरी में रामलगन राम और उनके दोनों पुत्र दिनेश और अवधेश राम सत्तू खाते हुए.....

बिजली की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। औसतन 15-16 घंटे बिजली रहती है। टेलीविजन और सेलफोन ने भी अपने पाँव बखूबी जमा लिए हैं। गाँव के बगीचों में अब बहस केवल ठाकुर मुखिया और श्याम बहादुर विधायक तक सीमित नहीं है बल्कि मोदी और ट्रंप तक पर लोग डिबेट करने की स्थिति में हैं, जो कि पहले नहीं दीखता था।

स्त्रियों की स्थिति में शराबबंदी ने अवश्य सुधार लाया है। झलकू महार की पत्नी कहती हैं कि दारू बंद होने से अब हम औरत लोग के रोज-रोज गाली और मार नहीं खाना पड़ता है। इधर नितीश कुमार की कई महिला केंद्रित योजनाओं का साफ-साफ असर इस गाँव की स्त्रियों पर दीखता है। पुनीतवा अब साइकिल से स्कूल जाने लगी है और गिरिजवा के विवाह में जलेसर महतो खूब खर्चा किए थे, ऐसा सुनने को मिला क्योंकि बारहवीं पास गिरिजवा को शादी के लिए सरकारी सहयोग मिला था। मनरेगा का प्रभाव अदालत काका के घर के उत्तर में ही निरुत्तर होकर लाचार दीख रहा है। केवल गड्ढा खोदकर फिर भरने का काम किया गया है।

बलियापट्टी गाँव में एक हनुमान जी का मंदिर है। यह गाँव का सांस्कृतिक केन्द्र है। हर मंगलवार को यहाँ भजन-अराधना बड़ी धूमधाम के साथ होती है। होली और छठ पूजा के वक्त जब प्रवासी नौकरी पेशा लोग गाँव में आते हैं तो यह मंदिर ही केन्द्र की तरह बन जाता है। बाहर रहने वाले ग्रामीण मंदिर के विकास हेतु प्रतिवर्ष कुछ दान दिया करते हैं। हालांकि कुछ ग्रामीणों का ऐसा भी कहना है कि गाँव के कई लोगों ने इस मंदिर के नाम पर भी काफी कमाया है। खैर! जो भी हो यह छोटा-सा गाँव स्वयं इठलाता हुआ वैश्वीकरण के साथ कदमताल करते हुए आगे बढ़ रहा है, जहाँ गँवई संवेदना खत्म होने जा रही है और पूंजी का आकर्षण सबके सिर चढ़कर बोल रहा है।

*****